OM 7 INITIAL_Page 1 and 2 10-07-2014 21:36 Page 12

"मैं" और शख्सियत

-ब्र.कु.प्रीति

दोस्त पाने के लिए दोस्त बनें

हम हमेशा अच्छे मालिक, कर्मचारी, जीवनसाथी, माँ-बाप और बच्चे चाहते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि हमें भी अच्छा इंसान बनने की ज़रूरत है। तज़रबा यही बताता है कि कोई इंसान पूरा नहीं होता, कोई नौकरी हर लिहाज़ से अच्छी नहीं होती और कोई जीवनसाथी भी सभी गुणों से भरपूर नहीं होता। जब हम पूर्णता की तलाश करते हैं तो हमें निराशा ही हाथ लगती है, क्योंकि तब हमारे हाथ पिछली तरह की परेशानी के बदले दूसरे तरह की परेशानी लगती है। पश्चिम में तलाक की दर बहुत ऊँची है और लोग जब दूसरी शादी करते हैं तो पाते हैं कि उनके लिए नए जीवनसाथी में पहले वाले की कमियां शायद न हों, लेकिन दूसरे तरह की बहुत सी कमियां होती हैं। इसी तरह, लोग नौकरियां बदलते हैं, या कर्मचारियों को नौकरी से यह सोचकर निकालते हैं कि बदले में बेहतरी मिलेगी, लेकिन उन्हें पता पड़ता है कि एक कमी से छुटकारा पाया तो दूसरी गले पड़ गई।

सहानुभूति और समानुभूति में क्या अंतर है? सहानुभूति का मतलब है, "मैं समझता हूँ तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है।" समानुभूति का मतलब है, "तुम्हें जो महसूस होता है वह मुझे भी महसूस होता है।" ये दोनों मन की ज़रूरी भावनाएं हैं, लेकिन इन दोनों में से दूसरों के भावों को महसूस करना ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

त्याग

दोस्ती त्याग मांगती है और इम्तिहान लेती है। दोस्ती और रिश्ते बनाए रखने के लिए त्याग, निष्ठा और समझदारी की ज़रूरत पड़ती है। त्याग बस यूँ ही की जाने वाली चीज़ नहीं है। इसके लिए अपनी आसानियां कुर्बान करनी पड़ती हैं। स्वार्थ की भावना दोस्ती को तोड़ देती है। हल्के-फुल्के रिश्ते तो आसानी से बन जाते हैं, लेकिन सच्ची दोस्ती बनाने और कायम रखने के लिए समय और प्रयास की ज़रूरत होती है। दोस्ती इम्तिहान की घड़ियों से गुज़रकर ही मज़बूत बनती है। हमें झूठे रिश्तों को पहचानना सीखना चाहिए।

सुख के साथी

एक सुख का साथी उस बैकर की तरह होता है जो आसमान साफ होने पर तो छाता उधार देता है, लेकिन बारिश होते ही उसे वापस ले लेता है। दो लोग जंगल के रास्ते जा रहे थे, तभी उन्हें एक भालू मिला। उनमें से एक तो झटपट पेड़ पर चढ़ गया लेकिन दूसरा ऐसा न कर सका। इसलिए वह ज़मीन पर मुर्दे की तरह लेट गया। भालू उसके कान के पास अच्छी तरह सूंघकर चला गया। पहले आदमी ने पेड़ से उतरकर पूछा, "भालू ने तुमसे क्या कहा?" दूसरे आदमी ने जवाब दिया, "उसने कहा कि ऐसे दोस्त का विश्वास मत करो जो खतरा आने पर उसे भुगतने के लिए तुम्हें अकेला छोड़ दे।" सच्ची दोस्ती में मदद करना, एक-दूसरे का अहसान नहीं होता। यह दोस्ती की सहज अभिव्यक्ति होता है, उसका मकसद नहीं। अगर एक-दूसरे से मदद हासिल करना दोस्ती का मकसद बन जाए, तो मकसद खत्म होने पर दोस्ती भी खत्म हो जाती है। रिश्ते अपने आप नहीं बन जाते, उन्हें बनाने में समय लगता है। रिश्ते ईर्ष्या, स्वार्थ, अहंकार और रूखें व्यवहार की वजह से नहीं, बल्कि दयालुता, आपसी समझ और आत्मत्याग के आधार पर बनते हैं। रिश्तों को महत्व देकर उन्हें गंभीरता से लेना चाहिए और एक बार रिश्ते बन जाएं तो उन्हें पौधों की तरह सींचना चाहिए। याद रखें, कोई भी पूर्ण नहीं होता।

दूसरों की भावना को महसूस करें

दूसरे से किए गए और अपने साथ किए गए नाजायज़ व्यवहार को हम अलग-अलग तराजू पर तोलते हैं। किसी अच्छी शख्सियत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण गुण दूसरों की अनुभूतियों को समझना है। जिनमें यह गुण होता है वे खुद से पूछते हैं, "मुझे तब कैसा महसूस होगा जब कोई दूसरा मेरे साथ ऐसा व्यवहार करेगा?"

एक पिल्ला

एक बच्चा पालतू जानवरों की दुकान से एक पिल्ला खरीदने गया। वहाँ चार पिल्ले एक साथ बैठे थे जिनमें से हर एक की कीमत 50 डॉलर थी। एक पिल्ला कोने में अकेला बैठा हुआ था। उस बच्चे ने जानना चाहा कि क्या वह उन्हीं बिकाऊ पिल्लों में से एक था? दुकानदार ने जवाब दिया हाँ, मगर वह अपाहिज है और बिकाऊ नहीं है। बच्चे ने पूछा? उसमें क्या कमी है? दुकानदार ने बताया कि बचपन से ही पिल्ले की एक टांग बिल्कुल खराब है और उसके पूंछ के पास के अंगों में भी खराबी है। बच्चे ने पूछा आप इसके साथ क्या करेंगे? उसको जवाब मिला कि उसे हमेशा के लिए सुला दिया जाएगा। बच्चे ने दुकानदार से उस पिल्ले के साथ खेलने की इजाज़त मांगी और दुकानदार ने हाँ कह दिया। बच्चे ने पिल्ले को गोद में उठा लिया और वह पिल्ला उसके कान चाटने लगा। बच्चे ने फैसला किया कि वह उसी पिल्ले को खरीदेगा।

दुकानदार भी बच्चे की ज़िद के आगे झुक गया। बच्चे ने दुकानदार को 2 डॉलर दिए और बाकी के 48 डॉलर लेने अपनी माँ के पास पहुँचा। दुकानदार ने जाते हुए बच्चे से पूछा कि वह क्यों अपने 50 डॉलर इस पिल्ले पर व्यर्थ गंवा रहा है जबकि इतने में एक अच्छा पिल्ला खरीद सकता है। बच्चे ने कुछ नहीं कहा पर अपने बाएं पैर से पैंट उठाई और उस पाँव में लगी ब्रेस उस दुकानदार को दिखाई। दुकानदार समझ गया और बच्चे को पिल्ला ले जाने की अनुमति दी।

हमदर्द बनें

जब आप दु:ख बाँटते हैं तो यह कम हो जाता है, जब आप सुख बाँटते हैं तो वह बढ़ जाता है। सहानुभूति और समानुभूति में क्या अंतर है? सहानुभूति का मतलब है, "मैं समझता हूँ तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है।" समानुभूति का मतलब है, "तुम्हें जो महसूस होता है वह मुझे भी महसूस होता है।" ये दोनों मन की ज़रूरी भावनाएं हैं, लेकिन इन दोनों में से दूसरों के भावों को महसूस करना ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

जब हम अपने ग्राहकों, मालिकों, कर्मचारियों और परिवार के लोगों के मनोभावों को खुद भी महसूस करते हैं तो हमारे रिश्ते कैसे हो जाते हैं? वे और अच्छे हो जाते हैं।

आप किसी व्यक्ति, समाज या देश के चरित्र की पहचान कैसे करते हैं? यह बहुत आसान है। सिर्फ यह देखिए कि व्यक्ति या समाज इन तीन तरह के लोगों से किस तरह पेश आता है - 1- अपाहिज. 2- बुज़ुर्ग 3- अपने जूनियर.यही लोग क्यों? क्योंकि ये लोग अपने अधिकारों के लिए बराबरी में खड़े नहीं हो पाते।

- सूचना-

ग्लोबल अस्पताल माउण्ट आबू, आबू रोड तथा एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज, आबू रोड में आवश्कता है –

1. रजिस्ट्रार ऑप्थेलमॉलॉजी, योग्यता:- एम.एस/ डी.एन.बी. (ऑप्थेलमॉलॉजी) के बाद का कम से कम तीन वर्ष का अनुभव।
2. आयुर्वेद स्पेशियलिस्ट, योग्यता:- बी.एम.एस./ एम.डी. (आयुर्वेद) पंचकर्मा का अनुभव। -3. मेडिकल ऑफिसर, योग्यता:- एम.बी.बी.एस./ सरकारी रिटायर्ड डॉक्टर भी आवेदन कर सकते हैं।- 4. क्लिनिकल इन्सट्रक्टर, योग्यता:- बी.एस.सी. (निर्सिंग) सम्बद्ध नर्सिंग काउंसिल में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य।- 5. ऑफिस असिस्टेन्ट, योग्यता:- 12वीं पास, ऑफिस कार्य का अनुभव।-इच्छुक ब्रह्माकुमार भाई बहनें संपर्क करें:
M-09414144062, ई-मेल:- ghrchrd@ymail.com

रतलाम-म.प्र.। विश्व नशा मुक्ति दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए महापौर शैलेन्द्र डागा, जिला कांग्रेस अध्यक्ष राजेश शर्मा, पतंजली नशा मुक्ति के श्री शर्मा व ब्र.कु. सविता।

तोशाम-हरियाणा। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर स्कूली बच्चों को शपथ दिलाते हुए ब्र.कु. सुनीता।

भावानगर-किन्नौर(हि.प्र.)। सिलाई सेंटर की महिलाओं को ईश्वरीय ज्ञान देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सरस्वती।

दुमका-झारखण्ड। झारखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं नगर अध्यक्षा श्रीमती अमिता रक्षित को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम। साथ हैं ब्र.कु. जयमाला।

यादिकी-आ.प्र.। यादिकी मंडलम प्रोग्राम के अंतर्गत 'योगिक खेती, ड्रग्स एडिक्शन, मेडिसिन और परमात्म संदेश' विषय पर आयोजित रैली का शुभारंभ करते हुए प्रसाद,फादर ऑफ चर्च, अचलम गुरु पदन्ना, बैंक मैनेजर नारायण, ब्र.कु. रेणुका तथा अन्य।

न्यू खुर्सिपार-भिलाई। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ओ.पी.श्रीवास्तव, ब्र.कु. नेहा तथा अन्य।